प्रकृति विज्ञान

सावधान लुटेरे साधुओं से

अशोक मानव

मानव समाज के हर क्षेत्र में प्रदूषण बढ़ गया है। जो लोग धर्म का निर्माण किए हुए हैं। वही धर्म को तोड़ रहे हैं। धर्म की रक्षा करने की सबसे अधिक जिम्मेदारी साधु समाज की ही होती है। पर इनके अन्दर काफी बदलाव आ गया है ये लोग व्यवहारिक रूप से सत्य को नहीं पूरा कर पा रहे हैं और साथ में गेरूवा वस्त्र पहन कर वैज्ञानिक तरीके से चमत्कार दिखाते है। जनता उस समय सोचती है कि यह चमत्कार धर्म से हो रहा है इस साधु को कोई सिद्धि है और इस विश्वास के कारण जनता साधु को काफी धन दे देती है। जब कि वे जो भी दिखाते है वह वैज्ञानिक होता है। इस धर्म की लड़ाई में सिर्फ ध्यान से विचार को रोक कर प्रकृति से सत्य स्थापि करके व्यक्ति के बारे में कुछ बता सकते हैं। यह सत्य प्रकृति में विचरण करने वाली सत्य आत्म के माध्यम से ऐसा कार्य सम्भव हो पाता है। प्रकृति मे दो तरह की आत्मा विचरण कर रही है एक सत्य आत्मा और दूसरी असत्य आत्मा। यह आत्मा मानव शरीर में अप्रत्यक्ष रूप से कार्य करती है। व्यक्ति का मूल स्वभाव जिस तरह का होता है उसी तरह की आत्मा आक्सीजन के माध्यम से शरीर में प्रवेश कर कार्य करती है। फिर इसी क्रिया से यह आत्मा बाहर निकल जाती है। जिस तरह की आत्म होती है उसी तरह की आत्म उसके अन्द प्रवेश करती है। इसका नियंत्रण प्रकृति करती है। यह धर्म सत्य प्राकृतिक विज्ञान है। यही व्यवस्था का धर्म है। इसका पालन जो करता है वह सत्य की प्रेरणा से करता है। ऐसे लोग आनन्द के लिए कार्य करते हैं। यही सत्य धर्म है इससे अधिक तत्व की क्रिया प्रतिक्रिया का व्यवहारिक विज्ञान है।